केन्द्रीय विद्यालय कृष्णराजपुरम, बेंगलुरु
हिंदी ई-पत्रिका 2024-25

उपायुक्त का संदेश

श्री धर्मेंद्र पटले , उपायुक्त

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, मंडल कार्यालय, बैंगलोर

विद्या ददाति विनयं, विनयाद् याति पात्रताम्।

पात्रत्वात् धनमाप्नोति धनात् धर्मं ततः सुखम्।।

विद्या विनय देती है,

विनय से पात्रता,

पात्रता से धन,

धन से धर्म और

धर्म से सुख प्राप्त होता है।

शिक्षा मनुष्य की वह नींव है, जिस पर मनुष्य का भविष्य निर्मित होता है। केंद्रीय विद्यालय संगठन, अपने शिक्षा के प्रति निरंतर प्रयासों से ज्ञान के ज्योत को भारतवर्ष में प्रज्ज्वलित करने का सार्थक प्रयास कर रहा है। इस संगठन के मेरे सभी वरिष्ठ अधिकारी, सहकर्मी, शिक्षक और कर्मचारी अपने पूरे समर्पण भाव के साथ शिक्षा को प्रत्येक विद्यार्थी तक पहुंचाने का सार्थक प्रयास कर रहे हैं।केंद्रीय विद्यालय संगठन के विद्या रूपी वातावरण में अपना भविष्य निर्मित कर रहे सभी विद्यार्थियों के सुनहरे भविष्य की मैं कामना करता हूं।

धन्यवाद

स्कूल प्रिंसिपल संदेश

प्रियजनों! हर स्कूल एक महत्वाकांक्षा का पोषण करता है। जब मैं महत्वाकांक्षा शब्द का उपयोग करता हूं, तो मैं एक समझ के साथ इस शब्द का उपयोग करता हूं कि महत्वाकांक्षा हमेशा हमारी क्षमता से एक इंच ऊपर होनी चाहिए। मुझे नहीं लगता कि 100% पास होना महत्वाकांक्षा हो सकता है, इसके लिए मेरे छात्रों की समझ के अंदर बहुत कुछ है जो उनके बौद्धिक अभिभावकों द्वारा निर्देशित है। स्कूल के लिए मेरे पास जो सपना, या सपना है, वह यह सुनिश्चित करना है कि आने वाले वर्षों में, प्रत्येक छात्र अल्मा मेटर को याद करते हुए, उसे एक निवास के रूप में सोचना चाहिए जिसने उस में मानवीय प्रतिभा का पोषण किया / उसे व्यक्तिगत एहसास कराया दिव्यता पहले से ही उसके अंदर छिपी है।

मुझे यकीन है, हम, प्रशासक, कर्मचारी, छात्र और अभिभावक इस परिसर को शांतिपूर्ण आदमी बनाने का हर संभव प्रयास करेंगे।

डॉ. रुदाल दुबे
प्रभारी प्राचार्य

संपादकीय

शिक्षक

1. सृष्टि जैन, प्राथमिक शिक्षक
2. कविता चंद्राकर, संविदा शिक्षक (हिंदी)
3. आर रजिनी देवी, संविदा शिक्षक (कम्प्यूटर विज्ञान)

विद्यार्थी

1. दिव्याङ्क रंजन, कक्षा 9
2. मोहम्मद इस्माइल, कक्षा 9
3. मोहम्मद याया बाशा, कक्षा 9
4. चरण कमल, कक्षा 9
5. मानस चौधरी, कक्षा 9
6. आकांशू कुमार, कक्षा 9

"सपनों की उड़ान"

सपनों की ऊँचाई पर चढ़ो,
मूल्यवान मेहनत को कभी न छोड़ो।
हर कठिनाई को दोस्त मानो,
सपनों के लिए पूरा ध्यान लगाओ।

शिक्षा की राह पर कदम बढ़ाओ,
सपनों की ओर हर दिन बढ़ते जाओ।
मेहनत से सफलता की चाबी मिलेगी,
हर चुनौती से नयी ऊर्जा मिलेगी।

संघर्ष से मत डरो, डटे रहो,
सपनों की ऊँचाइयों को छूने का हौसला रखो।
हर मुश्किल को पार कर जाओ,
सपनों की दुनिया में खो जाओ।

श्रीमती सुमन
(प्रिशिक्षित स्नातक शिक्षिका अंग्रेज़ी)

संस्कृत भाषा

अतीव प्राचीना भाषा भारतीय संस्कृति द्योतक संस्कृत भाषा सभी भाषाओं की जननी है।इसका व्याकरण पाणिनी महर्षि ने लिखा। अष्ठाध्यायी संस्कृत व्याकरण की ग्रन्थ है। इस में सूत्र प्रकार व्याकरण लिखा गया है।संस्कृत मे विशाल साहित्य है। भारतीय प्राचीन काल की ज्ञान इस में है। शिक्षा, व्याकरण, छंद, ज्योतिष, वेद, उपनिषद , पुराण, सुभाषित, तत्त्व, वेदांत आदि ज्ञान निहित है।संस्कृत पड़ने से हमारा देश का गर्व, देशप्रेम संस्कार, संस्कृति का परिचय होगा। सभी संस्कृत पढ़े एवं देश प्रेम बढ़ाए ।

विघ्नेश्वर
संस्कृत शिक्षक

गीत - धरती माँ है अपनी इसे बचाओ ।

धरती माँ है अपनी, इसे बचाओ ।
हरा भरा एक पेड़ लगाओ
स्वच्छ रहो..... स्वच्छ रहो..... स्वच्छ रहो हर पल
स्वस्थ रहो ..... स्वस्थ रहो ..... स्वस्थ रहो हर पल
आसपास न गंदगी करो
नरक न अपनी जिदंगी करो !
बीमारियों को तुम न बुलाओ ।
स्वच्छता मंत्र फैलाओ.....स्वच्छ रहो.....स्वस्थ रहो.....
कटे फटे फल यूं न तुम खाओ,खुली मिठाइयाँ यूं न तुम खाओ
भोजन से पहले हाथ धो आओ
इसी तरह स्वस्थ जीवन पाओ
अच्छी आदतें अपनाओ.... धरती है...

सृष्टि जैन
(प्राथमिक शिक्षक)

देशभक्ति कविता

बला से हमको लटकाए अगर सरकार फांसी से, लटकते आए अक्सर पैकरे-ईसार फांसी से। लबे-दम भी न खोली जालिमों ने हथकड़ी मेरी, तमन्ना थी कि करता मैं लिपटकर प्यार फांसी से। खुली है मुझको लेने के लिए आगोशे आजादी, खुशी है, हो गया महबूब का दीदार फांसी से। कभी ओ बेख बर तहरीके - आजादी भी रूकती है? बढ़ा करती है उसकी तेजी-ए-रफ्तार फांसी से। यहां सरफरोशाने-वतन बढ़ जाएंगे कातिल, कि लटकाने पड़ेंगे नित मुझे दो-चार फांसी से ।

स ऐ महर,
टीजीटी: सामाजिक विज्ञान

भारत में हिंदी का महत्व

भारत एक विविधतापूर्ण देश है जहां विभिन्न भाषाएँ बोली जाती हैं। इनमें से हिंदी का विशेष महत्व है। हिंदी न केवल एक भाषा है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति और पहचान का प्रतीक भी है। यहाँ कुछ बिंदुओं पर ध्यान दिया जा सकता है जो भारत में हिंदी के महत्व को दर्शाते हैं:

1. **राजभाषा**: भारतीय संविधान ने हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया है। यह सरकारी कार्यों और संचार के लिए मुख्य भाषा है। देश के अधिकतर हिस्सों में सरकारी दस्तावेज और आदेश हिंदी में जारी किए जाते हैं।

2. **संस्कृति का संरक्षण**: हिंदी साहित्य, संगीत, और फिल्में भारतीय संस्कृति को जीवित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। तुलसीदास, प्रेमचंद, और हरिवंश राय बच्चन जैसे साहित्यकारों ने हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है।

3. **सामाजिक एकता**: हिंदी देश के विभिन्न भागों को एक साथ जोड़ने का कार्य करती है। यह एक ऐसी भाषा है जिसे अधिकांश भारतीय समझते और बोलते हैं, जिससे भाषाई बाधाओं को पार करना आसान हो जाता है।

4. **शिक्षा और ज्ञान**: भारत में कई शैक्षणिक संस्थान हिंदी माध्यम में शिक्षा प्रदान करते हैं। यह छात्रों को उनके मातृभाषा में उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अवसर देती है। इसके साथ ही, कई वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान भी हिंदी में उपलब्ध कराए जा रहे हैं।

5. **हिंदी दिवस **: हिंदी दिवस हर साल 14 सितंबर को मनाया जाता है। यह दिन 1949 में भारतीय संविधान सभा द्वारा हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। इस दिन को मनाने का उद्देश्य हिंदी भाषा की महत्ता को समझाना और इसे प्रोत्साहित करना है।

इस प्रकार, हिंदी न केवल भारत की प्रमुख भाषा है, बल्कि यह राष्ट्रीय एकता, संस्कृति, और विकास का आधार भी है। इसके महत्व को समझकर और इसे बढ़ावा देकर हम अपने देश की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित रख सकते हैं।

नाम - कविता चंद्राकर
संविदा शिक्षक (हिंदी)

<u>कण-कण में संगीत...</u>

संगीत तनावमुक्ति का सर्वश्रेष्ठ माध्यम है। संगीत शिक्षिका होने के नाते मैं यह बात विश्वास के साथ स्वअनुभव के आधार पर कह सकती हूँ।प्रकृति के कण-कण में संगीत है, बात शंकर के डमरू की करें या कृष्ण के बांसुरी की, ह्रदय के धड़कन की करें या बारिश के बूंदों की, कोयल की सुरीली तान की करें या पंखों को फैलाकर नाचते मयूर की... संगीत की सुन्दरता तो बिखरी पड़ी है।जन्म से लेकर जीवन के आखिरी पड़ाव तक संगीत हर जगह अपनी उपस्थिति से अभिभूत करता है।आज के परिवेश में जब समस्त संसार अनेक प्रकार की चुनौतियों से जूझ रहा है, बदली हुई परिस्थितियों ने सभी के तन-मन को तनाव से भर दिया है। भय, असुरक्षा, विषाद का नकारात्मक वातावरण है, उसमें संगीत एक संजीविनी के रूप में कार्य कर सकता है।एक व्यक्तिगत पूर्व अनुभव साझा करना चाहती हूँ... मई का वो माह... तारीख 2.5.21... कोरोना महामारी अपने चरम पर थी.. विद्यालय में ग्रीष्मावकाश हो चुका था। ये मई का महीना बहुत सारे प्रियजनों का बिछोह लेकर आया था, मन अशांत तथा

तनावग्रस्त था। अचानक एक सुबह ख्याल आया की मेरे विद्यार्थी भी कमोबेश इसी मानसिक अवस्था से गुजर रहे होंगे। इस अवसाद से निकलने के लिए मैं कुछ सकारात्मक परिवेश तलाश रही थी, मैंने तत्काल प्राचार्य महोदया की अनुमति लेकर कुछ चयनित विद्यार्थियों का समूह बनाया और कीबोर्ड की ग्रीष्मकालीन कक्षाएं शुरू हुईं। कक्षा पाँच से आठ तक के कुछ विद्यार्थी जिनके पास वाद्ययंत्र था या फिर कटआउट और मोबाईल ऍप के द्वारा एक सामानांतर व्यवस्था बनाई गई और सप्ताह में चार दिन ऑनलाइन कक्षा में सीखने-सिखाने का क्रम चल पड़ा। मैंने स्वयं में एवं विद्यार्थियों में एक सकारात्मक बदलाव महसूस किया। कक्षा के दौरान मन का सारा तनाव जैसे पिघलने लगा था तत्क्षण मुझे संगीत की ताकत का अंदाज़ा हुआ।

ये बात मैंने इसलिए साझा की कि बता सकूँ कि संगीत में इस नकारात्मक वातावरण से निकलने की दैवीय शक्ति है। चिकित्सा क्षेत्र में भी आजकल म्यूजिक थेरेपी द्वारा अनेक रोगों का निदान किया जा रहा है मानसिक रोगों में तो इसका प्रभाव अत्यन्त आश्चर्यजनक देखा गया है।

“मन की अनकही बातों को कहने का माध्यम है संगीत

मन के रीतेपन को भरने का माध्यम है संगीत

सारी फ़िक्र परेशानियों को दूर करने का माध्यम है संगीत

ईश्वर की भक्ति में मीरा बनने का माध्यम है संगीत

खुद को उनके रंग में रंगने का माध्यम है संगीत...”

नाम- सुषमा चंद्र
पद- प्राथमिक संगीत

भारत के प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. विक्रम साराभाई - एक प्रेरणादायक व्यक्तित्व

डॉ. विक्रम साराभाई एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने भारत को विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया। उनका जन्म 12 अगस्त 1919 को अहमदाबाद में हुआ था। उन्होंने अपनी शिक्षा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से पूरी की और फिर भारत लौटकर वैज्ञानिक अनुसंधान में जुट गए।डॉ. साराभाई का सबसे बड़ा योगदान था भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम की स्थापना। उन्होंने 15 अगस्त 1969 को भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) की स्थापना की और इसके पहले अध्यक्ष बने।

लेकिन इस यात्रा में उन्हें कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उनमें से एक थी वित्तीय और संसाधनों की कमी। भारत 1960 के दशक में एक विकासशील देश था, और इसके पास विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में निवेश करने के लिए सीमित संसाधन थे। इसके बावजूद, डॉ. साराभाई ने हार नहीं मानी और उन्होंने अपने सपनों को पूरा करने के लिए अन्य तरीकों की तलाश शुरू की। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की मांग की और रूस और अमेरिका जैसे देशों के साथ समझौते किए। उन्होंने भारतीय उद्योगों से भी सहयोग की मांग की और उन्हें अंतरिक्ष कार्यक्रम में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया।

डॉ. विक्रम साराभाई ने 1969 में बेंगलुरु में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) की स्थापना की। ISRO ने भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और देश को विश्व स्तर पर एक प्रमुख अंतरिक्ष शक्ति बनाने में मदद की। ISRO के कारण शहर में कई नए उद्योग और स्टार्टअप्स की स्थापना हुई, जिन्होंने अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी और संबंधित क्षेत्रों में काम करना शुरू किया। इसके अलावा, ISRO ने शहर में कई शैक्षिक और प्रशिक्षण कार्यक्रमों की शुरुआत की, जिन्होंने युवाओं को अंतरिक्ष विज्ञान और प्रौद्योगिकी में करियर बनाने के लिए प्रेरित किया।

आज, बेंगलुरु भारत के अंतरिक्ष उद्योग का केंद्र है और ISRO का मुख्यालय यहीं स्थित है। शहर में कई अन्य अंतरिक्ष संगठन और कंपनियां भी स्थित हैं, जो अंतरिक्ष अनुसंधान और विकास में काम कर रही हैं।

डॉ. साराभाई ने अपने सपनों को पूरा करने के लिए अपनी दृढ़ संकल्प और संघर्ष क्षमता का प्रदर्शन किया, जो एक प्रेरणादायक कहानी है।

प्रशांत कुमार
टी .जी. टी (कार्यानुभव)

अनुशासन की राह

अनुशासन है जीवन की डोर,
जिससे बंधती है सफलता की छोर।
अनुशासन से ही बनते हैं महान,
जैसे सूरज की किरणों से दिन का मान।
जीवन में लाए जो अनुशासन का रंग,
उन्हीं के सपने होते हैं पतंग।
हर सुबह का अनुशासन, हर रात की शांति,
जीवन में लाता है खुशियों की गारंटी।
अनुशासन ही बनाता है इंसान को खास,
इससे मिलती है मन को सच्ची मिठास।

नेहा दहिया
(प्राथमिक शिक्षक)

कला के आयाम

संगीत, कविता, मूर्तिकला, वास्तुकला, नृत्य, नाटक और इसी तरह की अन्य कलाएँ स्थूल या सूक्ष्म इंद्रियों में से एक हैं, और इनमें से प्रत्येक अपनी अभिव्यक्ति के लिए दूसरों पर निर्भर हो सकती है।

मन इंद्रियों के माध्यम से सौंदर्य सार का अनुभव करता है और कला के माध्यम से उसे रूप और पदार्थ प्रदान करता है।

इस बुनियादी सौंदर्य अनुभव के स्तर पर, कला-संगीत, कविता, चित्रकला या मूर्तिकला के बीच कोई अंतर नहीं है।

यह भी याद रखना अच्छा है कि भले ही प्रत्येक कला का सुझाव के स्तर पर एक निश्चित रूप हो, लेकिन प्रत्येक कला अपरिभाषित और असीम है।

साधन और माध्यमों में उनके अंतर के संदर्भ में, कविता और चित्रकला अलग-अलग हैं, उदाहरण के लिए कविता वृक्ष, गच्छ, विक्षा जैसे मौखिक संकेतों से शुरू होती है; पहले मौखिक प्रतीक फिर वस्तु का भाव।

चित्रकला में वस्तु पहले आती है फिर रेखा और रंग के माध्यम से, यह कला भाषा में प्रवेश करती है।

हालाँकि, न तो कविता में पेड़ और न ही पेंटिंग में पेड़ वस्तु-पेड़ के समान रहता है; अपने स्वयं के विशेष सुझावों के माध्यम से वे एक संवेदनशील पाठक या दर्शक को एक सौंदर्य के अनुभव में ले जाते हैं।

मेरे शिक्षक अक्सर कहा करते थे कि बहुत से लोग सोचते हैं कि पेंटिंग समय के एक क्षण से संबंधित होती है, जबकि कविता और गीत ऐसे क्षणों के प्रवाह या अनुक्रम से संबंधित होते हैं।

करीब से देखने पर हम पाएंगे कि यह केवल आंशिक रूप से सत्य है।

आप एक पेंटिंग को एक नज़र में देख सकते हैं, लेकिन इसका सौंदर्य संदेश उस क्षण में पूरी तरह से सामने नहीं आता है।

एक पेड़ की पेंटिंग में, उसके पत्ते, उसका विवरण, कौशल और तकनीक की उसकी समृद्धि, सभी को बार-बार देखना पड़ता है; इसलिए हालांकि यह सब एक क्षण में एक साथ देखा जा सकता है, इस एक क्षण के रहस्य को सुलझाने के लिए विस्तृत अवलोकन के कई क्षण आवश्यक हैं।

इसी तरह हम कविता या गीत में कई क्रमिक क्षणों के संदर्भ में बात नहीं कर सकते क्योंकि हमें उनका पूरा संदेश तब तक नहीं मिलता जब तक हम अंत में कुल अविभाज्य तक पहुँचने के लिए इन विभिन्न क्षणों का अनुसरण नहीं करते।

यह क्षण कविता या गीत की पूरी लंबाई में संक्षिप्त/संक्षिप्त हो सकता है लेकिन यह अंत में ही एक पुष्ट अनुभव बन पाता है। दृश्य कला का विशेष गुण एक दृश्यमान वस्तु को दूसरी तरह की दृश्यमान वस्तु में बदलना है। एक गायक तब खुश होता है जब वह ध्वनियों या शब्दों के माध्यम से सूर्योदय की भावना को जगाने और उन्हें इसके साथ प्रतिध्वनित करने में सक्षम होता है।

एक दृश्य कलाकार एक फूल की अपनी चित्रित छवि में उसके नाजुक स्पर्श और सुगंध के गुणों को जगाने की आकांक्षा रखता है। कलाओं में अपने अभिव्यक्तिपूर्ण कार्य में एक-दूसरे तक पहुंचने की क्षमता होती है।

मुझे याद है कि कैसे मेरे शिक्षक ने कृष्ण की रासलीला की छवि का संदर्भ लिया और समझाया कि कैसे एक पेंटिंग हमें यह चित्र दे सकती है कि कला सृजन कैसे कार्य करता है। केंद्र में अवर्णनीय कृष्ण, सौंदर्यात्मक आनंद की छवि, प्रकृति की ऊर्जा-राधा की आत्म-तेजस्वी छवि के साथ खड़े हैं। उनके चारों ओर विभिन्न व्यक्तिगत कलाएं विभिन्न सौंदर्य आयामों के साथ अपनी भुजाओं को जोड़ती हैं और एक चुंबकीय घेरे में, कई कृष्ण और गोपियों की तरह, मापा, लयबद्ध गति में नृत्य करती हैं।

सिल्विया दास गुप्ता

(कला शिक्षक)

खिल खिलाती है बारिश

खिल खिलाती है बारिश की बूंदें, फूलों को देती खुशबू नई। चिड़ियों को गाती हैं सबने, मिलकर हम खेलें खुशियों की लहराई।

सूरज की किरणें खेलतीं हैं छलांग, खुदा ने बनाया यह सबकुछ अदभुत। खुशी-गम, सबको जीना सिखाए, खेलकर सिखें हम सच्चाई और प्यार का मज़ा।

बच्चों की जिंदगी खुशियों से भरी, आओ मिलकर रहें सब में भाई-बहन। खेलें, पढ़ें, और सपने सजाएं, बनाएं यह दुनिया सुंदर और मस्तान।

आओ खुशियों का मेला लगाएं, बनाएं यह दुनिया सबके लिए जन्नत।

के वी साई सुधा
(प्राथमिक शिक्षक)

पुस्तकालय

पुस्तकालय का अद्भुत संसार,
ज्ञान का अमृत, अनंत भंडार।
हर किताब में छुपा ज्ञान का मोती,
पढ़ने से मिलती है नई रोशनी।

शिक्षा का सागर, विचारों का मंथन,
हर पन्ने में छिपा, जीवन का दर्शन।

पढ़ने से मिलती नई दिशा,

पुस्तकालय है ज्ञान का सच्चा आश्रय।

नव विचारों का सृजन होता यहाँ,

बुद्धि का विकास, समझ का विस्तार।

आओ पुस्तकालय, ज्ञान का लो आनंद,

इससे मिलती शिक्षा, सच्ची और अनमोल।

जीवन की राहों में सही दिशा दिखाता,

पुस्तकालय का हर कोना हमें सिखाता।

आओ, चलो पुस्तकालय की ओर,

ज्ञान की रोशनी से भर लो अपना जीवन पूरा।

बिमल चंद नायर

(टी .जी. टी पुस्तकालयाध्यक्ष)

हम

हम हिंदू हैं, हम मुस्लिम है।

हम ही सिख, इसाई है।

जाति धर्म से अलग - अलग है, फिर भी सारे भाई है।

एक प्रात के नही निवासी, भले ही अलग है भाषा भाषी।

हम सब भारत माँ के बेटे, पहले हैं हम भारतवासी ।

डी. एन. देविक
कक्षा-2

पुस्तक

मेरी पुस्तक रंग-बिरंगी, कहे कहानी यह सतरंगी ।

कहती बातें नई - पुरानी, जैसे बोलें दादी - नानी ।

परीलोक की सैर कराती, कभी-कभी वे हमें डराती ।

कभी हँसाती, कभी रुलाती दुनिया की हर बात बताती।

नामः निविता श्री. एस
कक्षा:-2

भारत

भारत हमारा प्यारा देश, रंग बिरंगा, सुंदर हिमालय की ऊँचाई से, सागर की गहराई तक फैला है देश।कश्मीर से कन्याकुमारी विविधता में एकता की कहानी। तक, पहाड़, मैदान, जंगल, रेगिस्तान, हर जगह जीवन का उत्सव है मान।

बगाल की बाधिन, राजस्थान का घोड़ा, केरल का नारियल पंजाब का घोड़ा। अलग - अलग भाषा, धर्म, संस्कृति, फिर भी एक है हम, दिल से एक जुटी।

आओ मिलकर बनाए भारत को प्यारा, हरियाली, साफ-सफाई, सबका सहारा। बचपन से सीखें देशभक्ति की राह, गौरव शाली इतिहास को याद रखें साथ-साथ

ई पदमा प्रिया
कक्षा-2

भारत: एक विविधता की भूमि

भारत एक विविधता से भरा देश है,जहां विभिन्न भाषाएं, धर्म, और संस्कृति एक साथ मिलती हैं। यहा की संस्कृति धरोहर, ऐतिहासिक स्मारक, और त्योहार देश की पहचान को सजाते हैं। भारत की विविधता उसकी ताकत है, जो हर किसी को एक अद्‌वितीय अनुभव प्रदान करती है।भारत: एक विविधता की भूमि है.

नाम- कुशाल
कक्षा- 10

हमारा देश भारत पर निबंध

* हमारे देश का नाम भारत है।

* यह एशिया महाद्वीप में स्थित है।

* भारत की राजधानी नई दिल्ली है।

* हमारा देश भारत 15 अगस्त 1947 को अग्रेजों से आजाद हुआ।

* हमारे देश की संस्कृति और विविधता विश्व प्रसिद्ध है।

* आज हमारा देश शिक्षा, प्रौद्योगिकी, यापार अनुसंधान, स्वास्थ्य सेवा, हर क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है।

* हमारे देश के लोगे बहुत ही उदार और मेहनती है।

* हम अपने देश से बहुत थार करते हैं और हमें भारतीय होने पर गर्व है।

एस गीतिका
कक्षा-2

। अनुभव और अनुभूति पर कहानी ।

एक छोटे से लड़का पहाड़ी गांव में एक रहता था जिसका नाम सूरज था। सूरज की सबसे बड़ी इच्छा थी कि वह एक कुशल चित्रकार बने। लेकिन उसके पास चित्रकला की कोई विशेष शिक्षा नहीं थी। उसकी कला की प्रेरणा उसके गाँव की सुंदर वादियाँ और वहाँ की सरल ज़िंदगी से थी।

सूरज ने अपने अनुभव को उपयोग में लाने के लिए रोज़ाना पेड़ों, नदियों, और पहाड़ों के चित्र बनाए। उसकी चित्रकारी में खूबसूरती थी, लेकिन वह खुद को हमेशा असंतुष्ट महसूस करता था। उसे लगता था कि उसकी चित्रों में वह गहराई और भावनात्मकता नहीं है, जो एक वास्तविक कलाकार की होनी चाहिए।

एक दिन, गाँव में एक प्रसिद्ध चित्रकार, रवि जी, आए। सूरज ने उनकी चित्रकला देखी और उनसे मिलने का निश्चय किया। रवि जी ने सूरज की चित्रकारी देखी और उसे उत्साहवर्धन किया, लेकिन उन्होंने एक सलाह दी: "सूरज, तुम्हारे चित्र सुंदर हैं, लेकिन उनमें तुम्हारी आत्मा की गहराई का अनुभव नहीं आता। जब तुम अपनी खुद की कहानियाँ और भावनाएँ चित्रों में डालोगे, तब वे और भी जीवंत हो जाएंगे।"

सूरज ने रवि जी की सलाह मानी और अपने चित्रों में अपनी खुद की अनुभूतियों और अनुभवों को डालना शुरू किया। उसने अपने गाँव की ज़िंदगी, वहाँ की खुशियाँ और दुख, और उसकी खुद की भावनाओं को चित्रित किया।

धीरे-धीरे, सूरज के चित्रों में गहराई और भावनात्मकता आ गई। उसकी कला अब लोगों के दिलों को छूने लगी। उसने समझा कि केवल तकनीकी कौशल ही नहीं, बल्कि अनुभव और अनुभूति भी कला के अभिन्न अंग हैं।

इस प्रकार, सूरज ने अपने अनुभव और अनुभूति को अपनी चित्रकला में समेट कर, अपने सपनों को साकार किया और कला की नई ऊँचाइयों को छूआ।

नाम: दक्षिथ.भी
कक्षा: दसवीं

स्कूल का आखिरी दिन

आज आया है दिन विदा लेने का ,पता नहीं फिर अब कब मिलना होगा |

आज का दिन सबकों रुलायेगा , अच्छे - अच्छो की आंखे नम बनाएगा |

आज सबको पुरानी बाते याद आयेंगी कैसे ये शरारत किया करते थे कैसे उसको परेशान करते थे |

टीचर से बचने के लिए अपनाए गए वो तरीके ,एक के गलती सबकों कैसे प्रिन्सिपल के ऑफिस के पास ले जाती थी |

कविता

भारत

भारत मेरा प्यारा देश
सब देशो से न्यरा है,
हिंदु मुस्लिम सिख इसाई
मिल्कर रह्ते भाई भाई .
इसकी धरती उगले सोना
उचा हिमगिरि बडा सलोना,
सागर धोते इसके पाव,
हे इसके अल्बेले ग़ाव

मानस चौधरी
कक्षा- 9th

पुस्तक

मेरी पुस्तक रंग- बिरंगी ,

कहे कहनी यह सतरंगी,

कहनी बाते नयी पुरानी,

जेसे बोले दादी- नानी.

परलोक की सैर कराती

कभी कभी वो हमे डराती .

कभी हंसाती, कभी रुलाती ,

दुनिया की हर बात बताती.

नाम – वर्शिनि
कक्षा- 5

कहानी: मीठी यादे

सालों पहले, एक छोटे से गाँव में मिति नाम की एक प्यारी सी लड़की रहती थी। मिति का जीवन साधारण था, लेकिन उसकी खुशियाँ और यादें

अत्यधिक मूल्यवान थीं। उसके पास हर दिन छोटी-छोटी चीजें होती थीं, जो उसे खुश रखती थीं–गाँव के बाहर खेलना, माँ के हाथों से बने स्वादिष्ट पकवान

खाना, और दोस्तों के साथ हंसी-खुशी की बातें करना।एक दिन, मिति की माँ ने उसे एक पुराना परिवारिक फोटो एलबम दिखाया। यह एलबम मिति के परिवार

की पुरानी यादों से भरा हुआ था। उसमें बचपन की तस्वीरें, परिवार की खास तिथियाँ, और त्योहारों की तस्वीरें थीं। मिति ने देखा कि उसके दादा-दादी और

परदादा-परदादी की तस्वीरें भी थीं, जो उसे कभीदेखी नहीं थीं।जैसे-जैसे मिति ने उन तस्वीरों को देखा, उसकी आँखों में आंसू आ गए। उसने महसूस किया कि हर एक तस्वीर एक कहानी बयां करती है, एक भावना औरएक अनुभव का

प्रतिनिधित्व करती है। यह तस्वीरें उसे अतीत में ले जाती हैं, जहां उसकी दादी उसे कहानियाँ सुनाती थीं, उसके दादा उसे खेतों में ले

जाते थे, और उसके माता-पिता उसे प्यार और देखभाल से घेरे रहते थे।

मिति ने अपनी माँ से पूछा, “माँ, ये सारी यादें हमारे जीवन का हिस्सा क्यों हैं?”

माँ ने मुस्कुराते हुए कहा, “बेटा, यादें हमारी जीवनकी धरोहर होती हैं। ये हमें सिखाती हैं कि कैसे हमने अपने अतीत को जीया और कैसे हमने उन लम्हों में

खुशी पाई। ये यादें हमें हमारे जीवन के सुंदर क्षणों की याद दिलाती हैं और हमें प्रेरित करती हैं कि हम अपनी जिंदगी को वैसे ही प्यार और खुशी से भर दें।”

इस बात को समझते हुए, मिति ने तय किया कि वह अपनी यादों को संजोकर रखेगी और नए अनुभवों को भी उनके साथ जोड़ेगी। उसने अपने दोस्तों और

परिवार के साथ और अधिक समय बिताना शुरू किया, ताकि भविष्य में उसकी यादें भी उतनी ही अमूल्य और भावपूर्ण बन सकें। सालों बाद, जब मिति बड़े होकर अपने बच्चों को उन पुराने फोटो एलबमों को दिखाती, तो वह जानती थी

कि ये केवल तस्वीरें नहीं, बल्कि जीवन की अनमोल धरोहर हैं। इन यादों के माध्यम से, उसने अपने बच्चों को भी सिखाया कि जीवन की छोटी-छोटी खुशियाँ

और प्यारी यादें ही सबसे बड़ी संपत्ति होती हैं। और इस प्रकार, मिति की यादें उसके जीवन का सबसेसुंदर हिस्सा बन गईं, जो उसे हर दिन खुशियों और

प्रेरणा से भर देती थीं।

नाम - ओम प्रकाश
कक्षा - 7

पहेलियाँ और उनका उत्तर

1) 3 दिन में सोना और रात में चांदी, यह क्या है ?

> तारा) (Star)

2) कितने महीने 18 दिन के होते हैं?

> सभी महीने, ।

3) बिना खाए, बिना पिए, सबके घर में रहता है। ना खाता हूं , ना सोता है। घर की रखवाली करता है ।

> ताला (Lock)

4) एक आदमी 10 दिन बिना सोए कैसे रह लेता है।

> क्योंकी वे रात में, सो रहा था।

5) जेब में कुछ है, फिर भी जेब खाली है। बताओ क्या है?

> जेब मे छेद है।

स्वतंत्रता संग्राम की कहानी

एक बार की बात है, भारत देश अंग्रेजों के अधीन था। अंग्रेजों का शासन कठोर और अन्यायी था, जिससे भारतीयों कोबहुत कष्ट सहना पड़ता था। लोग स्वतंत्रता की चाह में संघर्ष कर रहे थे। इसी संघर्ष की एक प्रेरणादायक कहानी है| महात्मा गांधी की।

महात्मा गांधी, जिन्हें बापू भी कहा जाता है, ने सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलकर स्वतंत्रता संग्राम की अगुवाई की। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में अपने अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ने के बाद भारत लौटकर स्वराज का सपना देखा। गांधीजी ने 1915 में भारत आकर स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भूमिका निभानी शुरू की।

गांधी जी ने सबसे पहले 1917 में चंपारण सत्याग्रह का नेतृत्व किया। चंपारण, बिहार का एक जिला था, जहां नील कीखेती करने वाले किसानों पर अंग्रेजों का अत्याचार था। गांधी जी ने सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलते हुए किसानों कीसमस्याओं को उजागर किया और अंग्रेजों को झुकने पर मजबूर कर दिया। इस विजय ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एकनई ऊर्जा भर दी।

इसके बाद 1930 में गांधी जी ने दांडी यात्रा का आयोजन किया। यह यात्रा नमक सत्याग्रह के नाम से भी जानी जाती है।अंग्रेजों ने नमक पर कर लगाया था, जो भारतीयों के लिए बहुत ही अन्यायपूर्ण था। गांधी जी ने 12 मार्च 1930 को साबरमती आश्रम से दांडी तक की 240 मील लंबी यात्रा की, जिसमें लाखों भारतीयों ने भाग लिया। गांधी जी ने दांडी पहुंचकर समुद्र के पानी से नमक बनाया, जिससे अंग्रेजों के कानून का उल्लंघन हुआ। इस आंदोलन ने पूरे देश में एक नईक्रांति को जन्म दिया।

अंततः 1942 में गांधी जी ने "भारत छोड़ो आंदोलन" की शुरुआत की। उन्होंने अंग्रेजों से साफ शब्दों में कह दिया, "अंग्रेजों भारत छोड़ो।" इस आंदोलन में लाखों भारतीयों ने हिस्सा लिया और अंग्रेजों के खिलाफ जोरदार संघर्ष किया। इसआंदोलन ने अंग्रेजों को भारत छोड़ने पर मजबूर कर दिया।

15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हो गया। यह दिन भारतीयों के लिए गर्व और खुशी का दिन था। महात्मा गांधी औरउनके साथी स्वतंत्रता सेनानियों के अथक प्रयासों और संघर्षों की बदौलत भारत ने स्वतंत्रता प्राप्त की।

इस प्रकार, महात्मा गांधी के नेतृत्व में स्वतंत्रता संग्राम की यह कहानी हमें सिखाती है कि सत्य और अहिंसा के मार्ग परचलते हुए भी हम अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर सकते हैं और विजय प्राप्त कर सकते हैं।

नाम- एच. ज्ञानांजन
कक्षा- 10

आजादी का अमृत महोत्सव के बारे में जानकारी

आजादी का अमृत महोत्सव भारत की स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होने के अवसर पर मनाया जा रहा है।

महोत्सव के उद्देश्य

- स्वतंत्रता संग्राम: यह विषय आजादी का अमृत महोत्सव के तहत हमारे स्मरणोत्सव की पहल की शुरुआत करती है। यह विषय उन विस्मृत नायकों की कहानियों को जीवंत करने में मदद करता है जिनके बलिदान ने हमारे लिए स्वतंत्रता को एक वास्तविकता बना दिया है।

- 75 वर्ष पर विचार: जैसा कि हम जानते थे कि दुनिया बदल रही है और एक नई दुनिया सामने आ रही है। हमारे दृढ़ विश्वास की ताकत हमारे विचारों की लंबी आयु तय करेगी।

- 75 वर्ष पर उप्लाबधियाँ: इसका उद्देश्य 5000+ वर्षों के प्राचीन इतिहास की विरासत के साथ 75 साल पुराने स्वतंत्र देश के रूप में हमारी सामूहिक उपलब्धियों के सार्वजनिक खाते में विकसित होना है।

- 75 वर्ष पर कदम: यह विषय उन सभी प्रयासों पर केंद्रित है जो नीतियों को लागू करने और प्रतिबद्धताओं को साकार करने के लिए उठाए जा रहे है।

पी. एम. श्री हरिणी

कक्षा - 9

दोस्त हों तो ऐसा

दोस्त हर गलत काम से पहले मारे हाथ बताएं हमेशा सहीं बात।

जो तारीफ करता हुए न हिचकिचाए हमें अपनी गलतियां दिखाएं ।

अंक हमेशा अच्छे लाए,हर दम हमें खुश देखना चाहें

जिसने जीवन में न कभी ग़लत काम किए
काश हमारे अच्छे दोस्त सदियों तक जीएं

नाम - श्राव्या वी
कक्षा - सातवीं

यात्रा और यात्री

साँस चलती है तुझे
चलना पड़ेगा ही मुसाफिर!

चल रहा है तारकों का
दल गगन में गीत गाता
चल रहा आकाश भी है
शून्य में भ्रमता-भ्रमाता

पाँव के नीचे पड़ी
अचला नहीं, यह चंचला है

एक कण भी, एक क्षण भी
एक थल पर टिक न पाता

शक्तियाँ गति की तुझे
सब ओर से घेरे हुए है
स्थान से अपने तुझे
टलना पड़ेगा ही, मुसाफिर!

साँस चलती है तुझे
चलना पड़ेगा ही मुसाफिर!

थे जहाँ पर गर्त पैरों
को ज़माना ही पड़ा था
पत्थरों से पाँव के
छाले छिलाना ही पड़ा था

घास मखमल-सी जहाँ थी
मन गया था लोट सहसा

थी घनी छाया जहाँ पर
तन जुड़ाना ही पड़ा था

पग परीक्षा, पग प्रलोभन
ज़ोर-कमज़ोरी भरा तू

इस तरफ डटना उधर
ढलना पड़ेगा ही, मुसाफिर

साँस चलती है तुझे
चलना पड़ेगा ही मुसाफिर!

शूल कुछ ऐसे, पगो में
चेतना की स्फूर्ति भरते
तेज़ चलने को विवश
करते, हमेशा जबकि गड़ते

शुक्रिया उनका कि वे
पथ को रहे प्रेरक बनाए

किन्तु कुछ ऐसे कि रुकने
के लिए मजबूर करते

और जो उत्साह का
देते कलेजा चीर, ऐसे
कंटकों का दल तुझे
दलना पड़ेगा ही, मुसाफिर

साँस चलती है तुझे
चलना पड़ेगा ही मुसाफिर!

सूर्य ने हँसना भुलाया,
चंद्रमा ने मुस्कुराना
और भूली यामिनी भी
तारिकाओं को जगाना

एक झोंके ने बुझाया
हाथ का भी दीप लेकिन

मत बना इसको पथिक तू
बैठ जाने का बहाना

एक कोने में हृदय के
आग तेरे जग रही है,
देखने को मग तुझे
जलना पड़ेगा ही, मुसाफिर

साँस चलती है तुझे
चलना पड़ेगा ही मुसाफिर!

वह कठिन पथ और कब
उसकी मुसीबत भूलती है
साँस उसकी याद करके
भी अभी तक फूलती है

यह मनुज की वीरता है
या कि उसकी बेहयाई

साथ ही आशा सुखों का
स्वप्न लेकर झूलती है

सत्य सुधियाँ, झूठ शायद
स्वप्न, पर चलना अगर है
झूठ से सच को तुझे
छलना पड़ेगा ही, मुसाफिर

साँस चलती है तुझे
चलना पड़ेगा ही मुसाफिर!

एकनाथ
कक्षा-**7**

अपना घर

एक चिड़िया के बच्चे चार, घर से निकले पंख पसार।

पूरब से पश्चिम को जाते, उत्तर से दक्षिण को जाते। घूमधाम कर हार को आते,

अपनी माँ को बात सुनाते । देख लिया हमने जग सारा, अपना घर है सबसे प्यारा।

तेजस

कक्षा-**3**

26 जनवरी

हम नन्हे - मुन्ने बच्चे हैं, दाँत हमारे कच्चे हैं।

दिल के हम सच्चे हैं, वादों के हम सच्चे हैं।

हम भी सरहद जायेंगे, सीने पे गोली खायेंगे। मर जायेंगे मिट जायेंगे, देश की शान बढ़ायेंगे । हम नन्हे-मुन्ने बच्चे हैं, दाँत हमारे कच्चे हैं।

ईशू धाकड

कक्षा-**2**

पेड़

पेड़ हमारे साथी है

पेड़ हमारे साथी है,

छाया हमको देते है।

बाढ़ से हमें बचाते है

मीठे फल भी देते हैं।

पेड कितने जरूरी है

फिर भी बेचारे कटते हैं। हम भी पेड़ लगाएँगे

संसार को हरा भरा बनाएँगे।

गोकुल. आर. के.

कक्षा-3

पहेलियाँ और उनका उत्तर

1) 3 दिन में सोना और रात में चांदी, यह क्या है ?

> तारा) (Star)

2) कितने महीने 18 दिन के होते हैं?

> सभी महीने, ।

3) बिना खाए, बिना पिए, सबके घर में रहता है। ना खाता हूं , ना सोता है। घर की रखवाली करता है ।

> ताला (Lock)

4) एक आदमी 10 दिन बिना सोए कैसे रह लेता है।

> क्योंकी वे रात में, सो रहा था।

5) जेब में कुछ है, फिर भी जेब खाली है। बताओ क्या है?

> जेब मे छेद है।

स्वतंत्रता संग्राम की कहानी

एक बार की बात है, भारत देश अंग्रेजों के अधीन था। अंग्रेजों का शासन कठोर और अन्यायी था, जिससे भारतीयों कोबहुत कष्ट सहना पड़ता था। लोग स्वतंत्रता की चाह में संघर्ष कर रहे थे। इसी संघर्ष की एक प्रेरणादायक कहानी है| महात्मा गांधी की।

महात्मा गांधी, जिन्हें बापू भी कहा जाता है, ने सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलकर स्वतंत्रता संग्राम की अगुवाई की। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में अपने अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ने के बाद भारत लौटकर स्वराज का सपना देखा। गांधीजी ने 1915 में भारत आकर स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भूमिका निभानी शुरू की।

गांधी जी ने सबसे पहले 1917 में चंपारण सत्याग्रह का नेतृत्व किया। चंपारण, बिहार का एक जिला था, जहां नील कीखेती करने वाले किसानों पर अंग्रेजों का अत्याचार था। गांधी जी ने सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलते हुए किसानों कीसमस्याओं को उजागर किया और अंग्रेजों को झुकने पर मजबूर कर दिया। इस विजय ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एकनई ऊर्जा भर दी।

इसके बाद 1930 में गांधी जी ने दांडी यात्रा का आयोजन किया। यह यात्रा नमक सत्याग्रह के नाम से भी जानी जाती है।अंग्रेजों ने नमक पर कर लगाया था, जो भारतीयों के लिए बहुत ही अन्यायपूर्ण था। गांधी जी ने 12 मार्च 1930 को साबरमती आश्रम से दांडी तक की 240 मील लंबी यात्रा की, जिसमें लाखों भारतीयों ने भाग लिया। गांधी जी ने दांडी पहुंचकर समुद्र के पानी से नमक बनाया, जिससे अंग्रेजों के कानून का उल्लंघन हुआ। इस आंदोलन ने पूरे देश में एक नईक्रांति को जन्म दिया।

अंततः 1942 में गांधी जी ने "भारत छोड़ो आंदोलन" की शुरुआत की। उन्होंने अंग्रेजों से साफ शब्दों में कह दिया, "अंग्रेजों भारत छोड़ो।" इस आंदोलन में लाखों भारतीयों ने हिस्सा लिया और अंग्रेजों के खिलाफ जोरदार संघर्ष किया। इसआंदोलन ने अंग्रेजों को भारत छोड़ने पर मजबूर कर दिया।

15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हो गया। यह दिन भारतीयों के लिए गर्व और खुशी का दिन था। महात्मा गांधी औरउनके साथी स्वतंत्रता सेनानियों के अथक प्रयासों और संघर्षों की बदौलत भारत ने स्वतंत्रता प्राप्त की।

इस प्रकार, महात्मा गांधी के नेतृत्व में स्वतंत्रता संग्राम की यह कहानी हमें सिखाती है कि सत्य और अहिंसा के मार्ग परचलते हुए भी हम अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर सकते हैं और विजय प्राप्त कर सकते हैं।

नाम- एच. ज्ञानांजन
कक्षा- 10

समय

समय का जो रखता ध्यान, जग में होता उसका मान। समय को जो खोता है, बाद में रोता रहता है। समय कभी नहीं रुकता है, चलता है, बस चलता है। सफल वही यहाँ रहता है, समय के साथ जो चलता है।

के. वि थिकशा
कक्षा-3

गिलहरी

चूहे जैसा रूप है पाया, कोमल - कोमल जिसकी काया। लंबी पूँछ में रहते वाले देखो-देखो इसकी चाल । भागे सरपट भरी दुपहरी पीठ पर धारी वरी - भुरी । फल और बीज है इसका खाना कभी न बच्चों इसे सताना ।

मेघमालय
कक्षा - 3

दुनिया गोल

दादा जी की छड़ी गोल. दादी माँ की स्टेनक गोल, मम्मी जी की रोटी गोल, पापा जी का पैसा गोल, बच्चे कहते लुड्डू गोल, मैडम कहती दुनिया गोल ।

र पी अंशी
कक्षा - 3

बचपन

एक बचपन का जमाना था ...
जिस में खुशियों का खजाना था..
चाहत चाँद को पाने की थी ....
पर दिल तितली का दिवाना था..
खबर ना थी कुछ सुबह की..
ना शाम का ठिकानों था..
थक कर आना इस स्कूल से..
पर खेलने भी जाना था..

माँ की कहानी थी..
परियों का फसाना था..
बारिश में कागज की नाव थी..
ह र मौसम सुहाना था..

रोने की वजह ना थी..

ना हँसने का बहाना था..

क्यों हम इतने बड़े हो गए..

इससे अच्छा तो वो बचपन का जमाना था

वो बचपन का जामाना था..

नाम - सन्निब दास

कक्षा-5

जी के प्रश्न

1. सूर्य हमारी पृथ्वी से कितना गुना बड़ा है?
2. भारत में सबसे महंगा दूध किस जानवर का होता है?
3. अमेज़न की एक दिन की कमाई कितनी है?
4. किस देश ने कागज और बारूद का आविष्कार किया ?
5. किस पक्षी को सब कुछ नीला दिखाद देता है?

उत्तर 1. 13 लाख गुना

उत्तर 2 गधी का

उत्तर 3 340 करोड.

उत्तर 4 चीन

उत्तर 5 उल्लू

नैरुति

कक्षा-4

पहेलियाँ

प्रश्न-1 हाथ में हैं पैर में हैं पर जीभ में नहीं, बताओ क्या?

प्रश्न-2 वो जब डूबता है तो उसे देखने के लिए लोग उमड़ते हैं बताओं कौन?

प्रश्न-3 किस महीने में लोग सबसे कम सोते हैं?

प्रश्न-4 वह कौनसी चीज है जो धूप में नहीं सूख सकती

प्रश्न-5. ऐसी कौन सी चीज़ है जो गर्म होने पर जम जाती हैं ?

प्रश्न-6 ऐसी कौन सी चीज है जो खरीदते समय हरी होती है लेकिन इस्तेमाल करने पर लाल हो जती हैं?

प्रश्न-7. वो क्या है जिसे तोडने के बाद इंसान बहुत खुश होता है ?

उत्तर -

1. हड्डी , 2.सूरज ,3.फरवरी में (क्योकि फरवरी में दिन सबसे कम होते हैं), 4.पसीना ,5. अंडा ,6.मेहंदी ,7.रेकॉर्ड ।

निदा नेसरीन

कक्षा-4

मेरा देश कविता

मेरा देश निराला है

यहाँ कोई गोरा, कोई काला है। पर आपस में प्यार है,

सुन्दर-सुन्दर व्योहार है।

यहाँ हर बच्ची वीर है,

शक्ति की तस्वीर है।

देश का नाम है हिन्दुस्तान,

हम सब इसकी हैं सन्तान ।

जय हिन्द । जय भारत

सी.मौकतिका

कक्षा-5

डाकिया आया

देखो एक डाकिया आया

थैला एक हाथ में लाया।

चिट्ठी कई हाथ में पकड़े,

पहने है वह खाकी कपड़े ।

बाँट रहा घर - घर में चिट्ठी

मुझे भी दी लाकर चिट्ठी ।।

तनिष्का सी

कक्षा-5

दो दोस्त और भालू

एक दिन दो युवा दोस्त राम और श्याम जंगल जाने का फैसला किया और किसी भी खतरे के खिलाफ एक दूसरे की मदद करने का वादा भी किया। अचानक जंगल के रास्ते में एक भालू ने उन पर हमला कर दिया/ राम जल्दी से दौडा और एक पेड पर चड़ गया दूसरी ओर शाम के पास पर्याप्त समय नहीं था। बचने के लिए वो ज़मीन पर लेट गया, जैसे वह मर गया है। भालू तेज़ी से आगे बढ़ा और श्याम के पास आया, और ऐसा लगा जैसे भालू राम के काम में फूसफूसा रहा हो। श्याम ने अपनी सांस रोककर रखा और कुछ देर बाद भालू चला गया। राम पेड़ से नीचे आया और पूछा,श्याम....भालू ने आपके कान में क्या फूसकूसाया, श्याम ने जवाब दिया भालू ने मुझे स्वार्थी दोस्तों से दूर रखने के लिए कहा जो खतरे के समय भाग जाते है।

रिनिशा

कक्षा -4

चिड़िया

चिडिया, आई, चिड़िया आई चूँ-चू करती चिड़िया आई

दूर कहीं वह उड़कर जातो फिर खुश होकर वापस आती

चुग दाना चोंच में लाती बच्चों को अपने पास बुलाती ।

फुदक फुदक कर कभी न थकती बच्चों को उड़ना सिखलाती।

मीठे -मीठे गाना गाती तो सब बच्चों के मन को भाती।

चिड़िया आई चिडिया आई चु चूँ-चू करती चिड़िया आई

मिथिल
कक्षा-5

15 अगस्त पर कविता

15 अगस्त का दिन है आया, आजादी का पर्व है छाया । रंग-बिरंगे तिरंगे से, सज गया हमारा सारा देश । वीरों ने कुर्बानी दी थी, तब जाकर से आजादी मिली थी। महात्मा गाँधी, नेहरू जी महान सुभाष चन्द्र बोस का नाम है गुमान

आओ मिलकर करें हम वादा, देश को बनाएँगे सबसे प्यारा ।

देशभक्ति का जगे जुनून, हम हैं भारत माता के सपूत ।

स्वतंत्रता दिवस का पर्व मनाएं। देश का नाम रोशन करें, थे कसम खाएं।

भुवन
कक्षा-4

भारत मेरा प्यारा देश !

सब देशों से न्यारा देश !

हिन्दू मुस्लिम भाई-भाई, मिलकर रहते सिख ईसाई ! इसकी धरती उगले सोना,

ऊँचा हिमगिरि बड़ा सलोना !

सागर धोते इसके पाँव, है इसके अलबेले गाँव ।

हम सब भारतवासी हम हिंदू है, हम मुस्लिम है, हम ही सिख, इसाई हैं।

जाति धर्म से अलग-अलग हैं,फिर भी सारे भाई हैं।

एक प्रांत के नहीं निवासी, भले ही अलग हैं भाषा-भाषी।

हम सब भारत माँ के बेटे, पहले है हम भारतवासी

ए. कुमारा सुमुक
कक्षा -4

पुस्तक

मेरी पुस्तक रंग-बिरंगी ,कहे बातें नई पुरानी

परीलोक की सैर कराती ,कहे कहानी यह सतरंगी।

जैसे बोले दादी - नानी । कभी-कभी वो हमें डराती।

कभी हँसाती कभी रुलाती

दुनिया की हर बात बताती ।

वर्शिनी

कक्षा : 4

कुछ जानकारी

1. उड़ने वाले गुब्बारे में कौन सी गैस भरी जाती है?- हीलियम

2. मटके का पानी पीने से कौनसी बीमारी ठीक हो जाती है? ब्लड प्रेशर

3. किस जानवर का सिर काटने पर भी जिंदा रहता है? -कॉकरोच

4) किस जानवर का खून नीला होता है?- ऑक्टोपस

5) सांसार की पहली नोट किस देश में की थी। - चीन

6) ताज महल किस नदी के किनारे स्थित है? - यमुना

7) किस देश के लोग कुते का दूध पीते हैं? - मोनो

8) कौन सी मछली का पेट सर में होता है? -झींगा

9)अग्रेज सबसे पहले भारत कब आए थे ?- 20 मई 1498...

डी चैत्रन

कक्षा- -5

मेरा स्कूल पर कविता

सुबसे प्यारा मेरा स्कूल

जिसको नहीं सकता मैं भूल

माँ ने मुझको जन्म देकर ,जीवन का पहला पाठ पढ़ाया

स्कूल जाकर ही मैने इस दुनिया को पाया

खूब पढ़े शिक्षा यही देता हमारी शिक्षक

तभी बढ़ेगा भारत सबसे आगे

जब देश का हर बच्चा शिक्षित होगा

तभी तो मिटेगी देश की असाक्षरता

जब पूरा देश शिक्षित होगा, सबसे प्यारा मेरा स्कूल

परेम वेंकटा चेतन्या

कक्षा-5

हमारे देश की शिक्षा

मनुष्य के जीवन में जितना महत्त्व भोजन, कपड़े, हवा और पानी का है, उससे कहीं अधिक महत्व शिक्षा का है इसलिए हमेशा ये ही कहा जाता है कि शिक्षा का मानव जीवन मैं बहुत महत्व है। शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जिससे मनुष्य मे ज्ञान का प्रसार होता है। इंसान की बुद्धि का विकास शिक्षा अर्जित करने से ही होता है। शिक्षा मानव जीवन की एक महत्त्वपूर्ण इकाई है। शिक्षा न हो तो मनुष्य के जीवन की कल्पना भी मुश्किल इकाई है। शिक्षा ही हमे आगे कुछ करने के लिए आवश्यक होती है।

अनन्या
कक्षा -5

मेंढक के बारे में तथ्य

* पृथ्वी पर 7,000 से अधिक विभिन्न मेढक और टोड प्रजातियाँ है।

* ग्लास फ्रॉग स्पष्ट दिखता है क्योंकि यह अपने लाल रक्त कोशिकाओं को अपने यकृत में छिपा सकता है।

गोलियथ मेंढक बिल्कुल वैसा * ही है... गोलियथ ! इसका वज़न लगभग 3 किलो है।

* अंटार्कटिका को छोड़कर हर महाद्वीप मेंढक पाए जा सकते हैं।

मेंढकों के कितने रंग होते हैं। सिर्फ हरा नहीं। मेंढको के समूह को सेना कहा जाता है

यदि आप कभी किसी मेंढक को खाते हुए देखें तो आप देखेंगे कि वे अपनी आँखें बंद कर लेते हैं। ऐसा इसलिए, वे अपनी आँखों का उपयोग खाने के लिए करते हैं। वे भोजन को नीचे ले जाने के लिए अपनी आँखों को मुँह की छत में खींचते हैं।

मेंढकों को पानी पीने की जरूरत नहीं है; वे वास्तव में इसे अपनी त्वचा के माध्यम से अवशोषित करते हैं।

एम. वलमुकिल
कक्षा -5

हमारी राष्ट्रीय प्रतीक

राष्ट्रीय ध्वज- तिरंगा

राष्ट्रीय मुद्रा- रुपए

राष्ट्रीय जलीयजीव-डॉल्फिन मछली

राष्ट्रीय पंचांग- शक संवत

राष्ट्रीय खेल- हॉकी

राष्ट्रीय चिन्ह- अशोक स्तभ

राष्ट्रीय लिपि- देवनागरी

राष्ट्रीय भाषा- हिंदी

राष्ट्रीय पुरस्कार- भारत रत्न

राष्ट्रीय सूचना पत्र - श्वेत पत्र

राष्ट्रीय विदेशी नीति- गुट निरपेक्ष

राष्ट्रीय योजना-- पंचवर्षीय योजना

जी हेमल
कक्षा -5

शिक्षक

जीवन में जो राह दिखाए, सही तरह चमना सिखाए।

माता -पिता से पहले आता, जीवन में सदा आदर पाता।

सबको मान प्रतिष्ठा जिससे, सीखी कर्त्तव्यनिष्ठा जिससे।

कभी रहा दूर मैं जिससे, वह मेरा पथदर्शक है जो।

मेरे मन को भाता, वह मेरा शिक्षक कहलाता |

कभी है शांत, कभी है धीर, स्वभाव में सदा गंभीर, मन में दबी रहे ये इच्छा,

काश मैं उस जैसा बन पाता, जो मेरा शिक्षक कहलाता |

नाम : अकांशू कुमार
कक्षा : नौवी

हमारी जिंदगी का सफर

"जिंदगी की राहों में कई उतार-चढ़ाव हैं, कभी खुशियों के फूल खिलेंगे, कभी गमों के बादल छाएंगे।

लेकिन जीवन में कभी हार नहीं माननी चाहिए, क्योंकि जीवन में कुछ भी आसान नहीं है, मेहनत और संघर्ष से ही मिलती है सफलता।

जब तक जीवन में संघर्ष है, तब तक जीवन में सफलता है।

सपने देखने वालों को सपने कभी नहीं मिलते, लेकिन जो सपनों को पूरा करने की हिम्मत रखते हैं, वो ही सफलता को प्राप्त करते हैं।

जिंदगी में कुछ पाने के लिए कुछ खोना भी पड़ता है, लेकिन हार नहीं माननी चाहिए, क्योंकि जिंदगी में कुछ हासिल करने के लिए कुछ खोना भी जरूरी है।

आशाएं जब टूटने लगती हैं, और मनोबल गिरने लगता है, तब याद रखना कि जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं।

हर बाधा को पार करने का साहस करना होगा तुम्हें, क्योंकि जीवन में कुछ भी आसान नहीं है, मेहनत और संघर्ष से ही मिलती है सफलता।"

पी. एम. श्री हरिणी
कक्षा - 9

गाँव का क्रिकेट मैच

गाँव की छोटी-सी धरती पर, जहाँ हर दिन आम की ठंडी छाँव और खेतों की हरियाली से भरा होता था, एक सालाना क्रिकेट मैच का आयोजन होता था। यह मैच गाँव की एक परंपरा बन चुका था, और इस दिन पूरा गाँव रंगीन झंडों और उत्साही चेहरों से सज जाता था।

इस साल, क्रिकेट मैच की तैयारियाँ जोरों पर थीं। गाँव में दो प्रमुख टीमें होती थीं–एक टीम थी "गाँव के योद्धा" और दूसरी टीम थी "नवीन क्रिकेटर्स"। गाँव के योद्धा को हमेशा से ही मैच जीतने की आदत थी, जबकि नवीन क्रिकेटर्स ने ठान लिया था कि इस साल वे जीतकर दिखाएँगे।

गाँव के योद्धा टीम के कप्तान, रामु, एक अनुभवी और कुशल खिलाड़ी थे। वे अपने क्रिकेट कौशल और खेल की रणनीति के लिए जाने जाते थे। दूसरी ओर, नवीन क्रिकेटर्स के कप्तान, मोहन, युवा और उत्साही थे। मोहन का मानना था कि खेल में हार-जीत से अधिक महत्वपूर्ण है टीम का समर्पण और संघर्ष।

मैच के दिन, पूरा गाँव उत्साह से भरा हुआ था। रामु और मोहन दोनों ने अपनी-अपनी टीमों को मैदान में बुलाया। दर्शकों की भीड़ बढ़ती जा रही थी, और हर कोई अपनी पसंदीदा टीम को समर्थन देने के लिए तैयार था।

मैच की शुरुआत हुई। पहले बल्लेबाजी करने की बारी गाँव के योद्धा की थी। रामु और उनके साथी खिलाड़ियों ने बल्लेबाजी की शुरुआत की। शुरुआती ओवरों में, गाँव के योद्धा ने आक्रामक खेल दिखाया और अच्छे रन बनाए। लेकिन नवीन क्रिकेटर्स ने भी संघर्ष करना शुरू कर दिया। मोहन की कप्तानी में, उन्होंने गेंदबाजी की रणनीति बदली और कुछ विकेट भी चटकाए।

अब नवीन क्रिकेटर्स की बारी थी बल्लेबाजी करने की। खेल रोमांचक हो चुका था। मोहन और उसके साथियों ने शानदार खेल दिखाना शुरू किया। मोहन ने

अपनी बल्लेबाजी से सभी को प्रभावित किया। उन्होंने गेंद को बड़े धैर्य और कौशल से खेला। एक के बाद एक रन बनते गए और खेल के आखिरी ओवर में मैच का नतीजा तय होना शुरू हुआ।

आखिरी ओवर में, नवीन क्रिकेटर्स को जीत के लिए 15 रन की जरूरत थी। मोहन ने एक शानदार शॉट लगाया और गेंद सीमा के बाहर चली गई। पूरा गाँव खुशी से झूम उठा। नवीन क्रिकेटर्स ने मैच जीत लिया!

मैच के बाद, गाँव के योद्धा और नवीन क्रिकेटर्स दोनों ने एक-दूसरे को बधाई दी और मैच के दौरान किए गए शानदार खेल की सराहना की। रामु ने मोहन की पीठ थपथपाई और कहा, "तुमने बहुत अच्छा खेला, मोहन। इस बार जीत तुम्हारी है, लेकिन अगली बार हमें चुनौती देना मत भूलना।"

मोहन ने हंसते हुए जवाब दिया, "धन्यवाद, रामु। यह मैच हमें सिखाता है कि खेल में जीत और हार से अधिक महत्वपूर्ण है दोस्ती और सम्मान।"

गाँव के लोग खुशी और उत्साह से भरे हुए थे। इस मैच ने साबित कर दिया कि खेल एक ऐसा माध्यम है, जो न केवल मनोरंजन प्रदान करता है बल्कि लोगों के बीच भाईचारा और एकता को भी बढ़ावा देता है। नवीन क्रिकेटर्स की जीत ने सबको यह सिखाया कि मेहनत और समर्पण से किसी भी चुनौती को पार किया जा सकता है।

इस प्रकार, गाँव का सालाना क्रिकेट मैच सिर्फ खेल नहीं, बल्कि उत्साह, एकता और दोस्ती का प्रतीक बन गया।

चरण कमल

कक्षा -9

कुछ जानकरी

प्रश्न 1:- भारतीय संविधान का पिता किसे कहा जाता है?

उत्तर: भीमराव अंबेडकर ।

प्रश्न 2 ः भारत के किस शहर में जंतर मंतर स्थित है?

उत्तर :- दिल्ली में।

प्रश्न 4:- दुनिया का सबसे सस्ता फल कौन सा है?

उत्तर :-केला

प्रश्न 5 :- किस देश में प्लास्टिक प्रयोग करने पर सजा दी जाती है?

उत्तर:- इजरायल देश में।

प्रश्न:6- इंसान की शरीर में कितनी हड्डिया होती ह?

उत्तर :- 206

प्रश्न :7- भारत में कुल कितनी भाषाए बोली जाती है?

उत्तर :- 121 भाषा ।

प्रश्न 8:- भारत में सबसे पहली ट्रेन कहाँ चली थी?

उत्तर :- मुम्बई ।

प्रश्न 9:- कौन सा जानवर खड़े खड़े सो जाता है?

उत्तर :- घोड़ा।

प्रश्न 10:- सबसे कम जीने वाला जीव कौन है ?

उत्तर:- मच्छर ।

नितेश
कक्षा -5

पहेली

सूखी हो तो 2 किलो

गीली हो तो । किलो

जल जाए तो 3 किलो क्या हो जाता है?

सही जवाब - सल्फर

सल्फर एक रासायनिक तत्व है।

अगर हम 2 किलो सुखी सल्फर लेते हैं। और उसे गीला करते हैं। क्योंकि सल्फर का एक गुण होता है। इस धनत्व पानी के घनत्व से ज्यादा होता है। और यह पानी मे घुलती नहीं है। यह पानी की सतह पर तैरती रहते इस लिए इसका वजन २ किलो से घटकर। किलो हो है। अगर सल्फर को जलाते है। तो आक्सीजन से क्रिया करके इसका वजन आधा बढ़ जाता है।

नाम- हर्ष चौहान
कक्षा - 4

भारत

हमारा प्यारा देश, रंग बिरंगा, सुंदर हिमालय की ऊँचाई से, सागर की गहराई तक फैला है देश।

कश्मीर से कन्याकुमारी विविधता में एकता की कहानी। तक, पहाड़, मैदान, जंगल, रेगिस्तान, हर जगह जीवन का उत्सव है मान।

बगाल की बाधिन, राजस्थान का घोड़ा, केरल का नारियल पंजाब का घोड़ा।
अलग - अलग भाषा, धर्म, संस्कृति, फिर भी एक है हम, दिल से एक जुटी।

आओ मिलकर बनाए भारत को प्यारा, हरियाली, साफ-सफाई, सबका सहारा।
बचपन से सीखें देशभक्ति की राह, गौरव शाली इतिहास को याद रखें साथ-साथ

ई पदमा प्रिया
कक्षा-2